सत्र 2020–21

Kala Ratna Diploma in Performing Art- I Year
(K.R.D.P.A.)
Private

S.No.	Paper Description	Maximum	Minimum
01.	Theory		
	Paper- I	100	33
	Paper-II	100	33
02.	Practical – I Demonstration & Viva	100	33
	Practical – II Stage Performance	100	33
	Grand Total	400	132

स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु
कला रत्न डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट (K.R.D.P.A.)
प्रथम वर्ष
तबला–शास्त्र
प्रथम प्रश्न पत्र

समयः 3 घण्टे

पूर्णांक	उत्तीर्णांक
100	33

इकाई 1

तबले के संदर्भ में घराना और बाज की व्याख्या। तबले के सभी घरानों का विस्तृत ऐतिहासिक अध्ययन।

इकाई 2

निम्नलिखित शास्त्रकारो के सांगीतिक योगदान का परिचयः– स्वाति, भरत, मंतग, शारंगदेव, महाराणा कुंभा, पार्श्वदेव, व्यंकटमखी, महाराजा सवाई, प्रताप सिंह देव।

इकाई 3

उत्तर एवं दक्षिण भारतीय लोक संगीत के प्रमुख अवनद्व एवं घन वाद्यों की जानकारीः–खंजरी, डमरू, नक्कारा, ढ़ोल, ढ़ोलक, डफ, डफली, नाल, खोल, कांस्य ताल, घड़ियाल, घटम, मुखचंग, करताल, झांझ।

इकाई 4

निम्नलिखित वाद्यों के विकास का ऐतिहासिक परिचयः– दुंदुभि, पणव, पटह, दर्दुर, मृदंग, ड़मरू। वाद्या के वर्गीकरण के सिद्वांत का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

इकाई 5

उत्तर भारतीय ताल पद्वति का विस्तृत अध्ययन। उत्तर भारतीय तथा कर्नाटक ताल पद्वति का तुलनात्मक अध्ययन।

स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु
कला रत्न डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट (K.R.D.P.A.)
प्रथम वर्ष
तबला–शास्त्र
द्वितीय प्रश्न पत्र

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक	उत्तीर्णांक
100	33

इकाई 1

भातखण्डे व पं. पलुस्कर ताललिपि पद्वतियों का विस्तृत अध्ययन। पाश्चात्य स्वर ताललिपि पद्वति का सामान्य ज्ञान।

इकाई 2

गायन, वादन, एवं नृत्य के साथ तबला संगति के सिंद्वात। संगीत संबंधी किसी विषय पर निंबध लेखन।

इकाई 3

त्रिताल, तिलवाड़ा, सवारी (15 मात्रा), गजझम्पा, आड़ाचौताल, धमार, दीपचंदी, झूमरा, एकताल, चौताल, झपताल, सूलताल, कहरवा, रूपक, तीव्रा, दादरा इन तालों को विभिन्न लयकारियों में ताललिपि में लिखने का अभ्यास :– जैसे – पौनगुन, सवागुन पौने दो गुन, सवा दो गुन।

इकाई 4

तिहाई एवं चक्रदार रचनाओं का गणितीय विवेचन तथा दिये गये बोलों के आधार पर तिहाई एवं चक्रदार की रचना कर ताल लिपि में लिखना।

इकाई 5

पेशकार, कायदा, रेला, तथा लग्गी के रचना सिद्वात एवं विस्तार का ज्ञान।

स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु
कला रत्न डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट (K.R.D.P.A.)
प्रथम वर्ष
क्रियात्मक (वायवा)

पूर्णांक	उत्तीर्णांक
100	33

1. त्रिताल, झपताल तथा एकताल में संपूर्ण स्वतंत्र वादन (विभिन्न प्रकार के कायदों, रेले, गतों, परनों, टुकड़ों, चक्करदार, तथा तिहाईयों सहित)।
2. रूद्र (11 मात्रा) तथा सवारी (15 मात्रा) में सम्पूर्ण वादन।
3. ठेको के माध्यम से लयकारी का प्रदर्शन :– त्रिताल, झपताल, रूपक, और एकताल इन तालों के ठेके परस्पर एक आवर्तन के हिसाब से बजाने का अभ्यास।
4. घरानों की विशेषताओं को प्रदर्शित करते हुए विभिन्न घरानों की बंदिशों को पढ़ने व बजाने का अभ्यास।
5. झूमरा, एकताल, त्रिताल, दीपचंदी, तिलवाड़ा, झपताल, आड़ाचौताल, तीव्रा, सूलताल व धमार इन तालों क ठके संगत की दृष्टि से उपयुक्त लयों में निरंतर बजाने का अभ्यास।
6. सुगम संगीत में प्रयुक्त तालों के विभिन्न ठेक तथा लग्गियां, लड़ियां और तिहाईयां बजाने का अभ्यास।

स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु
कला रत्न डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट प्रथम वर्ष (K.R.D.P.A.)
क्रियात्मक (मंच प्रदर्शन)

पूर्णांक	उत्तीर्णांक
100	33

1 आमंत्रित श्रोताओं के समक्ष तबला स्वत्रंत वादन का प्रदर्शन :–

(अ) त्रिताल, झपताल, रूपक तथा एकताल म से किसी एक ताल में न्यूनतम 20 मिनट तबला वादन। (10 मिनिट परीक्षार्थी की इच्छानुसार एवं 10 मिनिट परीक्षक के निर्देशानुसार)

(ब) रूद्र तथा सवारी में से किसी एक ताल में न्यूनतम 10 मिनट वादन।

2 तबला स्वर मे मिलाने का ज्ञान।

3 गायन/वादन के साथ तबला संगति का प्रदर्शन।

:संदर्भ सूची:

1. तबला प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा
2. तबला कौमदी भाग 1 एवं 2 – पं. रामशंकर पागलदास जी
3. ताल प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा
4. ताल वाद्य शास्त्र – डॉ. एम. बी. मराठे
5. भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन – डॉ. अरूण कुमार सेन
6. ताल वाद्यों की आवश्यकता एवं उपयोगिता– डॉ. चित्रा गुप्ता
7. तबला वादन के घराने एवं परम्पराएँ – डॉ. अबान मिस्त्री
8. भारतीय संगीत वाद्य – डॉ. लालमणि मिश्र
9. ताल परिचय भाग–3 – पं. गिरीषचन्द्र श्रीवास्तव